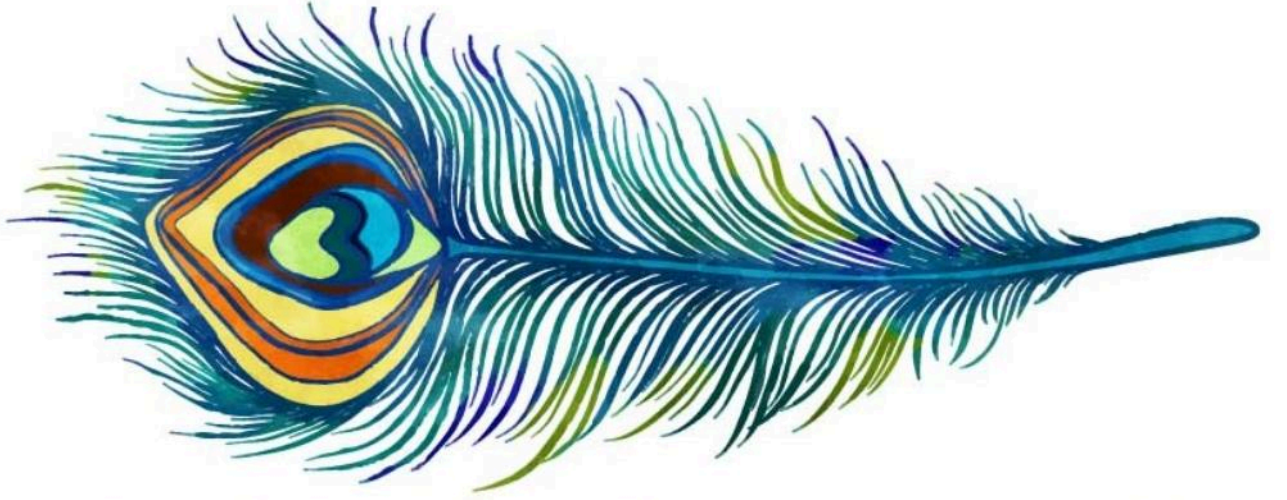


Chapter 2, verse 20

Reसंस्कृत™



न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

Bhagavad Gita 2.20 | resanskrit.com

The soul is never born, never dies once it comes into being,
it never ceases to be. Unborn, eternal, abiding and prime-
val, it does not perish when the body is slain.

आत्मा किसी काल में भी न जन्मता है और न मरता है,
न यह एक बार होकर फिर अभावरूप होने वाला है।
आत्मा अजन्मा, नित्य, शाश्वत और पुरातन है, शरीर के नाश होने पर भी इसका नाश नहीं होता।

Chapter 2, verse 27

Reसंस्कृत™

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।

jātasya hi dhruvo mṛtyurdhruvaṁ janma mṛtasya ca

तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥

tasmādaparihārye'rthe na tvam śocitumarhasi



Death is certain for the born, and re-birth is certain for the dead; therefore you should not feel grief for what is inevitable.

जन्मने वाले की मृत्यु निश्चित है और मरने वाले का जन्म निश्चित है इसलिए जो अटल है अपरिहार्य है उसके विषय में तुमको शोक नहीं करना चाहिये।

Bhagavad Gita Chapter 14, verse 09



सत्त्व

रजस्

तमस्

Resanskrit™ | resanskrit.com

सत्त्वं सुखे सञ्जयति रजः कर्मणि भारत ।
ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे सञ्जयत्युत ॥

resanskrit.com

O scion of the Bharata dynasty, sattva attaches one to happiness, rajas to action, while tamas, covering up knowledge, leads to inadvertence also.

Bhagavad Gita14.09

हे अर्जुन! सत्त्वगुण मनुष्य को सुख में बाँधता है, रजोगुण मनुष्य को सकाम कर्म में बाँधता है और तमोगुण मनुष्य के ज्ञान को ढँक कर प्रमाद में बाँधता है।